8

पहाड़ी चित्रकला

पिछले अध्याय में आपने मुगल चित्रकला के बारे में जाना। आइए, अब पहाड़ी चित्रकला के बारे में पढ़ते हैं। पहाड़ी चित्र पंजाब की पहाड़ियों में स्थित छोटी-छोटी रियासतों में एक महान कला के रूप में फली-फूली। इसका संरक्षण इन क्षेत्रों के स्थानीय राजा द्वारा लगभग 1675 से 1823 ई. के बीच किया गया। वे मुख्य रूप से राजपूत थे। पहाड़ी चित्रकला में धार्मिक एवं लौकिक दोनों विषयों को चित्रित किया जाता था। महाभारत, रामायण, पुराण, गीता जैसे धार्मिक महाकाव्यों पर आधारित पेंटिंग अक्सर पहाड़ी शैली में चित्रित की गई। संस्कृत और रसिकप्रिया, बारहमासा तथा हिंदी के अन्य लोकप्रिय ग्रंथ थे जिन्हें पहाड़ी चित्रकला में प्रतिनिधित्व मिला।

धर्मनिरपेक्ष विषयों में रोजमर्रा की जिंदगी का चित्रण, अदालत के दृश्य तथा चित्र शामिल थे और हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल और सस्सी-पुन्नों की प्रेम कहानियाँ। रागमाला के नाम से जानी जाने वाली संगीत विधाओं की पेंटिंग पहाड़ी चित्रकला में भी देखी गई। पहाड़ी चित्रकला में आमतौर पर कंट्रास्ट के विपरीत चमकीले रंगों का प्रयोग किया जाता था। प्रकृति चित्रण पहाड़ी चित्रकला की संरचना का एक महत्वपूर्ण घटक बनाया। पहाड़ी चित्रकला के कई विद्यालय हैं। इनका मूलस्थान केन्द्रों के नाम से जाने जाते हैं, जैसे कांगड़ा, बसोहली, मनकोट, गुलेर, जम्मू, मंडी, चम्बा, बिलासपुर, कुल्लू और गढ़वाल आदि पहाड़ी चित्रकला के प्रसिद्ध संरक्षकों में से हैं। बसोहली, कांगड़ा और जम्मू से कृपाल पाल, संसार चंद और रंजीत देव की चित्रकारी इस शैली के विकास में क्रमशः महत्वपूर्ण योगदान दिया था। नैनसुख, मनकू, कुशन लाल, फतू और राम लाल, पुपंडित सेउ और पुरखू कुछ प्रसिद्ध पहाड़ी चित्रकार थे। कई महान लेखक, कवि और इस अवधि के दौरान दार्शनिकों का जन्म हुआ जिन्होंने वैष्णववाद के प्रसार और कला के विकास में बहुत योगदान दिया। 16वीं और 17वीं ईसवी में प्रेमी और प्रेमिका को आध्यात्मिक अनुभव द्वारा दर्शाया गया था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- पहाड़ी लघुचित्र कला का संक्षेप में वर्णन कर सकेंगे;

- दिए गए पहाड़ी चित्रों की मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट कर सकेंगे;
- पहाड़ी चित्रों की सामान्य विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न चित्रों की विषयवस्तु आधारित विशेषताओं में अंतर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- इन कलाकृतियों के काल के बारे में लिख सकेंगे।

8.1 कदंब वृक्ष के नीचे, कांगड़ा शैली

प्रिय शिक्षार्थी! आइए, अब कांगड़ा शैली के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

जयदेव कृत 'गीतगोविन्द' एवं तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' को कांगड़ा शैली के चित्रों से सजाया गया। पंजाब की संस्कृति तथा गुरु नानक द्वारा आरंभ किए गए महान सिख आन्दोलन ने भी कांगड़ा के चित्रकारों को प्रेरित किया। राजा संसारचंद्र के राजसी संरक्षण में सुंदर मानवरूप और प्रकृति के चित्रण में कांगड़ा के चित्रकार अपने शिखर पर पहुँचे। कांगड़ा दरबार के चित्रकारों द्वारा सिख गुरुओं के भी चित्र बनाए गए। कांगड़ा की कला हिन्दूधर्म के आध्यात्मिक तथा साहित्यिक पुनरुत्थान से गहरी जुड़ी हुई है। कांगड़ा के चित्रों में परिप्रेक्ष्यता का पूर्ण अभाव है, परन्तु यह कमी चित्रकारों ने आभापूर्ण रंग-योजना तथा ओजपूर्ण महीन रेखांकन में पूरी कर ली है। लगभग सभी चेहरे एक रूपरेखा में बनाए जाते हैं। कांगड़ा के चित्र अपने कोमल रेखांकन, चमकदार रंग तथा महीन सजावटी विवरणों के चित्रण की विशेषता के कारण सरलता से पहचान लिए जाते हैं। स्त्रियों की हिरण जैसी आँखें, सीधी नाक और खूबसूरती से तराशा हुआ चेहरा कांगड़ा चित्रों की विशेषताएँ हैं।

चित्र बनाने के लिए काम में लाया गया कागज विशेष तकनीक से तैयार किया जाता था। पतले कागजों की एक तह लगाकर उन्हें आपस में चिपकाकर एक कागज तैयार किया जाता था जिसे 'वसली' कहा जाता है। इसमें उपरांत इस कागज पर सफेद खड़िया मिट्टी में बबूल का गोंद मिलाकर तैयार किए गए घोल का लेप किया जाता था। इस पतले घोल को कागज पर लगाने से उसके छिद्र बंद हो जाते हैं तथा उसकी सतह सपाट एवं चिकनी हो जाती है।

चित्रों में प्रयोग करने हेतु रंग प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते थे; जैसे- लाल रंग लाही नामक कीड़े या चुकन्दर से, नीला रंग जामुन या नील से; पीला रंग हल्दी, रामराज (एक पत्थर) अथवा गोगुली पत्थर से; हरा रंग लेपिस-लाजूली से अथवा पत्तियों को उबालकर किया जाता है; काला रंग काजल तथा सुनहरा रंग अनार के छिलके से प्राप्त किया जाता था।

1. 'वसली' पर रेखांकन ट्रेसिंग द्वारा या सीधे ही कर लिया जाता था।
2. गिलहरी अथवा घोड़े के बालों से बनाए गए ब्रुशों द्वारा अपारदर्शी रंग भरे जाते थे।

3. ब्रुश विभिन्न मोटाई के बनाए जाते थे। रेखांकन एक या दो बालों से बने महीन ब्रश से आरंभ किया जाता है।
4. चित्र में शेडिंग करने हेतु बिन्दुओं की पुनरावृत्ति का प्रयोग किया जाता है।
5. सोने तथा चांदी के वर्क का प्रयोग गहनों के चित्रण हेतु किया जाता था।
6. चित्रांकन के उपरांत चित्र को चिकने पत्थर से घिसकर उसकी सतह पर पालिश की जाती थी।

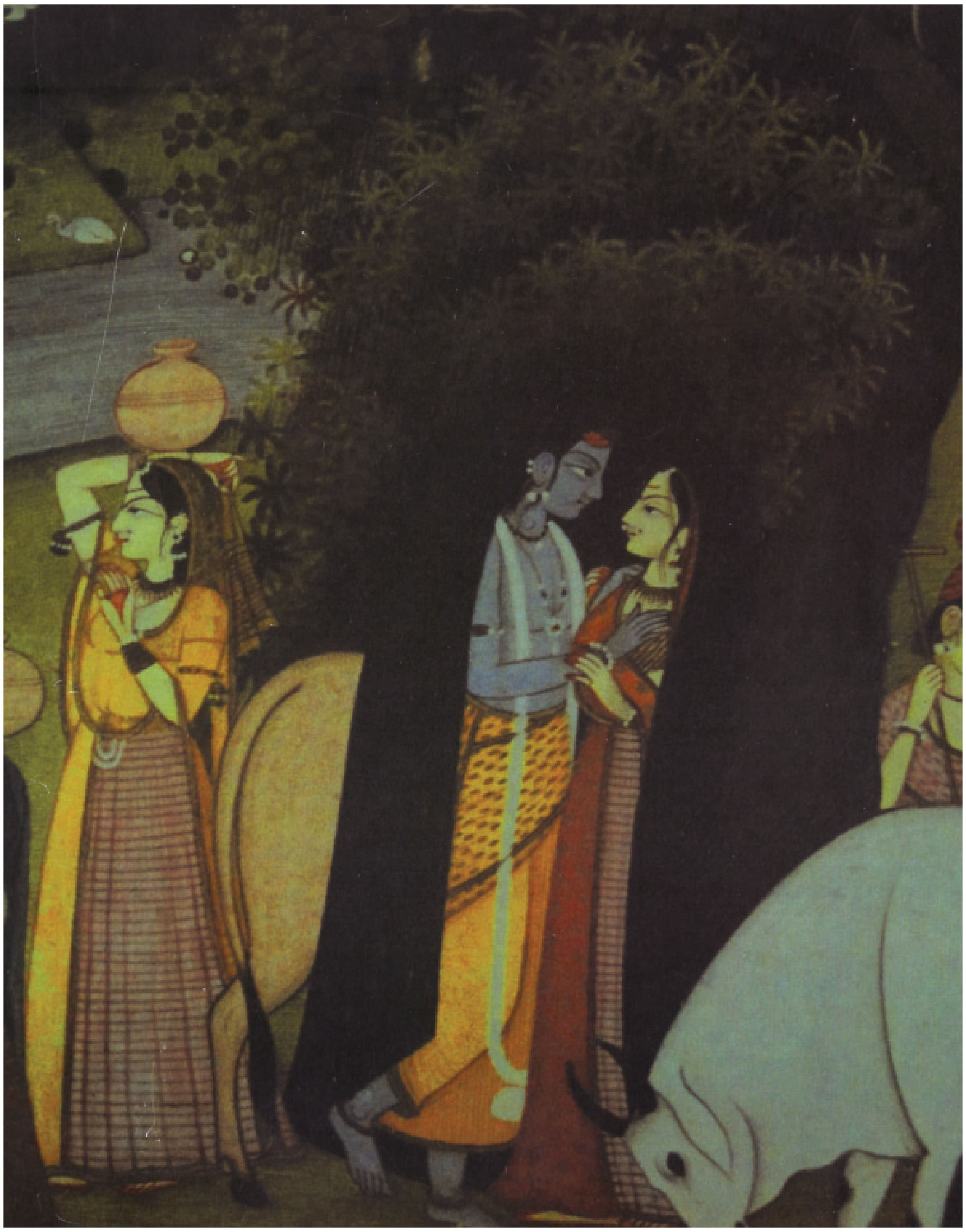

चित्र 8.1: कदंब वृक्ष के नीचे

शीर्षक	:	**कदंब वृक्ष के नीचे**
काल	:	1820-30 ईसवी
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी जलरंग
संग्रह	:	हर्ष डी. दहेजिया का संग्रह

सामान्य विवरण

कांगड़ा चित्रों का केंद्रीय विषय प्रेम है जिसमें मनोभावों की अभिव्यक्ति पूर्णत: लयपूर्ण, गरिमापूर्ण तथा सौंदर्यपूर्ण ढंग से एक विशिष्ट शैली द्वारा की गई है।

यमुना के किनारे घने उपवन में कदंब वृक्ष के नीचे कृष्ण और राधा की प्रेमलीला को दर्शाया गया है। ग्वाले गाय चरा रहे हैं तथा ग्वालिनें सिर पर बर्तन रखे हुए हैं। कदंब वृक्ष की घनी शाखाओं और पत्तों के मध्य मोर तथा अन्य पक्षी चित्रित किए गए हैं।

यमुना के किनारे सारस तथा अन्य उड़ते पक्षियों के चित्रण से चित्र अद्‌भुत रूप से प्रभावी दिख रहा है। यह चित्र श्रृंगार से परिपूर्ण है।

यह दो आत्माओं के एकरूप हो जाने को दर्शाता है। इन चित्रों में नीले, पीले तथा लाल रंगों का प्रयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न 8.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कांगड़ा कला की केन्द्रीय विषयवस्तु है :

   (i) प्रेम (ii) क्रोध

   (iii) भय (iv) आनंद

2. वैष्णव धर्म के पुनरुत्थान में किनका योगदान था?

   (i) तुलसीदास (ii) रामानुज और जयदेव

   (iii) तुलसीदास और जयदेव (iv) कृष्णराजा और तुलसीदास

3. कांगड़ा चित्रों में प्रेम को किस रूप में दर्शाया गया है?

   (i) राम और सीता (ii) लक्ष्मी और नारायण

   (iii) राधा और कृष्ण (iv) हीर और रांझा

8.2 वर्षा : कांगड़ा शैली

अब कांगड़ा शैली के एक और चित्र के बारे में जानते हैं।

बुनियादी सूचना

कांगड़ा चित्रों की विशेषता उस कोमल रेखांकन में निहित है जिसकी सहायता से विभिन्न आकार तथा आकृतियाँ चित्रित की जाती हैं। इनमें कोमल एवं हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है। सूक्ष्म विवरण और आलंकारिक गुणों पर अधिक ध्यान दिया गया है। खूबसूरत आँखें और तराशे हुए चेहरे इनकी विशेषता है। रंग प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए गए हैं। चित्रों के विषय 'रामायण' और 'गीतगोविन्द' से लिए गए हैं।

चित्र 8.2: वर्षा

शीर्षक	:	**वर्षा**
शैली	:	कांगड़ा
काल	:	1800 ईसवी
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी जलरंग

सामान्य विवरण

एक महल की छत पर वर्षा आच्छादित आकाश के तले एक प्रेमी युगल को चित्रित किया गया है। 'बारहमासा' अर्थात साल के बारह महीने हिंदू चित्रकारों तथा कवियों के प्रिय विषय रहे हैं। प्रसिद्ध कवि केशवदास ने अपनी रचनाओं में विभिन्न ऋतुओं के दौरान आम लोगों के दैनिक कार्यकलापों का सुंदर वर्णन किया है। कांगड़ा के चित्रकारों ने इन विवरणों पर रंग और रेखाओं से सुंदर चित्र बनाए हैं। राजा संसारचंद्र के समय में बनाया गए इस चित्र में राधा और कृष्ण के रूप में एक युगल को हर्षोल्लास से वर्षा का स्वागत करते दर्शाया गया है। भूमि हरी घास से सजी हुई है। हाथी और चीता ठण्डी फुहारों का आनंद ले रहे हैं। इन चित्रों में कांगड़ा चित्रकारों का प्रकृति-प्रेम झलकता है।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. किन महान साहित्यिक कृतियों ने कांगड़ा के चित्रकारों को प्रेरित किया?
2. कांगड़ा शैली के चित्रों के विकास में मुख्य कारक कौन-कौन से थे?
3. कांगड़ा शैली के चित्रों की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
4. चित्रांकन हेतु रंग किन स्रोतों से प्राप्त किए जाते थे?

8.3 कमल-पुष्प धारण किए कृष्ण की राधा से प्रेमलीला

आशा है कि आप कांगड़ा शैली को समझ गए होंगे, अब हम बसोहली शैली के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

बसोहली शैली के आरंभिक चित्र पंजाब की पहाड़ी रियासतों में हर जगह उपलब्ध थे। बसोहली चित्र सरल होते हैं, परन्तु इनमें शक्ति तथा आदिम जीवंतता का समावेश होता है। चित्रों का प्रारूप रेखाओं और रंगों से प्रभावशाली होता है। चित्रकारों ने जिस स्पष्टता और आवेग से कार्य किया है उसने इन चित्रों को ऊर्जावान व सशक्त बना दिया है। चित्रकारों ने कम-से-कम परिश्रम से अधिकतम की प्राप्ति की है। बसोहली चित्रों की विशेषता हरे-हरे भूदृश्यों का चित्रण है। 'प्रेम

मंडप' एक अनोखी वास्तुशिल्प संरचना है जो इस भू-दृश्य में समायोजित होता है। राजा कृपाल उस समय बसोहली क्षेत्र का शासक था तथा उसे विभिन्न विषयों पर चित्रित पाण्डुलिपियाँ तैयार कराने और संग्रहित करने का शौक था। वह औरंगजेब काल की मुगल कला की बारीकियों को समझता था। इस समय 'रसमंजरी', 'भागवतपुराण' तथा 'गीतगोविन्द' की चित्रित पाण्डुलिपियाँ तैयार की गईं, जिनमें कृष्ण का चित्रण प्रमुखता से किया गया है। 18वीं सदी के दौरान बसोहली के शासकों में रसमंजरी के प्रति विशेष लगाव रहा। उन्होंने भानुदत्त द्वारा रचित इस प्रेमाख्यान पर चित्रकार देवीदास (1694-95) द्वारा कुछ अत्यंत उत्कृष्ट श्रेणी के चित्र तैयार कराए। बसोहली चित्रण शैली अपने आपमें अनूठी थी तथा अपनी स्थानीय बेजोड़ रंग-योजनाओं, काष्ठ वास्तुशिल्पीय अभिप्रायों, बड़ी चमकती आँखें, सुडौल आकृतियों जैसी विशेषताओं के कारण 17वीं तथा 18वीं सदी में प्रचलित लघुचित्र शैलियों के बीच सशक्त कला-अभिव्यक्ति हेतु विशेष स्थान रखती है।

चित्र 8.3: कमल-पुष्प धारण किए कृष्ण की राधा से प्रेमलीला

शीर्षक	:	**कमल-पुष्प धारण किए कृष्ण की राधा से प्रेमलीला**
काल	:	1660-1670 ईसवी
स्थान	:	बसोहली
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी रंग
संग्रह	:	विक्टोरिया अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन

सामान्य विवरण

'रसमंजरी' की चित्रित प्रति से लिए गए इस प्रसिद्ध चित्र में कृष्ण के भव्य रूप तथा शृंगार रस से परिपूर्ण नायिका अथवा रसिकप्रिया को एक अलग परिवेश में दर्शाया गया है। कांगड़ा शैली के चित्रित कृष्ण रूप से भिन्न बसोहली शैली में कृष्ण के नगरीय आभिजात्य रूप को चित्रित किया गया है। राधा के साथ कृष्ण के अनेक रूपों को बदल-बदलकर राजसी रूप में चित्रित किया है। कृष्ण को भागवत के एक पशुपालक और शरारती ग्वाले के स्थान पर एक राजपुरुष की भाँति चित्रित किया गया है। कृष्ण का यह रूप बसोहली के शासकों को अवश्य की आनंदमय लगता होगा। इस चित्र में गहरी काव्यात्मक समझ तथा अनेक ऋतुओं और वनों के प्रति संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं। राधा और कृष्ण के प्रेम की यह नगरीय तथा राजसी व्याख्या संभवत: इसलिए उस समय के राजपूत राजघराने को प्रभावित करती होगी, क्योंकि वे भी इसका अपने जीवन में पालन करते होंगे। कृष्ण हाथ में एक कमल लिए है और राधा महल में बैठी हैं। यहाँ राधा महल में तकिए का सहारा लिए आत्मविश्वास से भरी राजसी अंदाज में बैठी हैं, जो कांगड़ा शैली में चित्रित शर्मीली और लजीली राधा से पूर्णत: भिन्न हैं। यहाँ वृंदावन की देहाती राधा का राजपूत दरबार में मोहक तथा सौंदर्यपूर्ण वातावरण में एक बदला हुआ रूप देखने को मिलता है।

पाठगत प्रश्न 8.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. इन चित्रों में .... माध्यम प्रयोग किया गया है।
2. भागवत पुराण, ... और ....पांडुलिपियाँ हैं और इनमें कृष्ण की मुख्य उपस्थिति है।

8.4 दरबारी को संबोधित करते कृष्ण : बसोहली शैली

अब हमलोग बसोहली शैली के अन्य चित्रकला को सीखेंगे।

बुनियादी सूचना

कांगड़ा चित्रों की तुलना में बसोहली चित्र अधिक मुखर, पुरुषप्रधान और सरल हैं। इनमें कांगड़ा चित्रों में प्रयुक्त कोमल व मिश्रित रंगों के स्थान पर चमकीले और शुद्ध रंगों का प्रयोग हुआ है। बसोहली चित्रों की विशेषता बड़ी चमकीली आँखें और बहुआयामी चेहरे हैं।

चित्र 8.4 : दरबारी को संबोधित करते कृष्ण

शीर्षक	:	**दरबारी को संबोधित करते कृष्ण**
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी रंग
काल	:	1660-1670 ईसवी
संग्रह	:	विक्टोरिया अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन

सामान्य विवरण

महल में तकिए से टेक लगाकर बैठे कृष्ण, एक दरबारी को संबोधित कर रहे हैं। इस चित्र में बसोहली शैली की खास विशेषताएँ; जैसे- गहरी रंगयोजना, काष्ठ वास्तुशिल्पीय अभिप्राय, बड़ी चमकदार आँखें, अल्हड़ तनी हुई देहयष्टि आदि का समावेश है। एक राजा के रूप में कृष्ण को अपने दरबार में आनेवाले अनेक गणमान्य लोगों से मिलना पड़ता है। चित्र में दर्शाया गया आगंतुक किसी अन्य राज्य से आया प्रतीत होता है, जो उसकी पगड़ी से ज्ञात होता है। यह मुलाकात व्यक्तिगत और गोपनीय है, अत: महल के अंदर एकांत में हो रही है। चित्र का संयोजन आयताकार है तथा इसमें बहुकोणीय दूरदृश्य लघुता का प्रयोग किया गया है। यद्यपि चित्रित आकृतियाँ आँख की सतह पर बनाई गई हैं परन्तु पलंग को आँख की सतह से नीचे रखकर चित्रित किया गया है।

पाठगत प्रश्न 8.4

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कीजिए :

1. 'दरबारी को संबोधित करते कृष्ण' चित्र किस अवधि में बना :

   (i) 1665-70 ईसवी (ii) 1660-70 ईसवी

   (iii) 1560-70 ईसवी (iv) 1760-70 ईसवी

2. बसोहली चित्र शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?

   (i) चमकीले रंग (ii) रंग हल्के

   (iii) बड़ी आँखें (iv) लंबे बालों का स्टाइल

8.5 विश्वरूप I: चंबा शैली

प्रिय शिक्षार्थियों! आप बसोहली शैली के बारे में पढ़ चुके हैं। आइए, अब चंबा शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

बुनियादी सूचना

वर्तमान हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से पहाड़ी नगर चंबा में फली-फूली इस चित्र शैली ने पहाड़ी शैली के चित्रों के इतिहास में अपनी एक छाप छोड़ी है।

कृष्ण उपासना तथा वैष्णव धर्म से प्रेरित चंबा शैली ने विश्व को उत्कृष्ट श्रेणी के चित्र दिए हैं जो पूर्णत: भारतीय हैं और अपनी मिट्टी से जुड़े हैं। चंबा शैली के चित्रों के मुख्य विषय हैं- 1. दशावतार-श्रृंखला (1725-50 ईसवी) 2. विश्वरूप-श्रृंखला (18वीं ईसवी), 3. भागवतपुराण-श्रृंखला (1757 ईसवी) और 4. रामायण (1750-75 ईसवी)।

चंबा के चित्रकारों ने वसली कागज पर चित्र बनाए। प्राकृतिक एवं खनिज रंगों का प्रयोग किया गया जिन पर बाद में चिकने पत्थर की सहायता से दोनों ओर घिसाई करके पालिश की जाती थी।

चंबा के चित्रकारों पर मुगल शैली एवं उसकी रंग-योजनाओं का प्रभाव था, परन्तु इसके बाद भी इस शैली ने अपनी स्थानीय विशेषताओं को बनाए रखा। पुरुष आकृतियों की वेशभूषा में मुगल लघुचित्रों से समानता दिखती है।

शीर्षक	:	**विश्वरूप 1**
शैली	:	चंबा
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी जलरंग
माप	:	302 सेमी × 23.8 सेमी
संग्रह	:	न्यूयार्क, अमेरिका

चित्र 8.5: विश्वरूप 1

सामान्य विवरण

यह एक असामान्य विश्वरूप है, क्योंकि इसमें सिर, भुजाएँ और पैर- लाल, हरे, सलेटी, नीले, पीले, और गुलाबी रंगों से रंजित हैं। चौबीस भुजाएँ एक वृत्त बनाती हुई चित्रित हैं जिनके रंग भिन्न हैं तथा उनमें विभिन्न अस्त्र-शस्त्र, कमल, शंख, घंटी, संभवतः वेद तथा सर्प लिए हुए हैं। एक के ऊपर एक सिर की चार पंक्तियाँ हैं। मध्य में चार सिर तथा उनके ऊपर प्रत्येक पंक्ति में 23 प्रोफाइल सिर वाले (एकचश्मी) चेहरे बने हुए हैं। इस प्रकार कुल 52 चेहरे बने हैं। शरीर वृक्ष की छाल जैसी किसी चीज़ से ढँका हुआ है और उसके मध्य ब्रह्मा, शिव, सूर्य और चंद्र झाँक रहे हैं।

दोनों ओर एक नारी और एक पुरुष आकृति हाथ जोड़े खड़े हैं। संभवतः वे राजा तथा रानी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। सबसे निचले भाग में दो छोटी आकृतियाँ राजकुमारियों को चित्रित कर रही हैं। देव के शरीर में दो उकड़ू बैठी आकृतियाँ भी चित्रित हैं।

पाठगत प्रश्न 8.5

1. पहाड़ी चित्र किस कालखण्ड में बनाए गए हैं?
2. चंबा शैली के चित्रों की क्या विशेषताएँ हैं?
3. चंबा शैली के चित्रों के मुख्य विषय क्या हैं?

क्रियाकलाप

अपने इलाके के किसी पुस्तकालय में जाइए और पहाड़ी चित्रों के चित्र एकत्र कीजिए। अब इन चित्रों का सही तरह से प्रयोग करके एक कोलाज बनाएँ।

आपने क्या सीखा

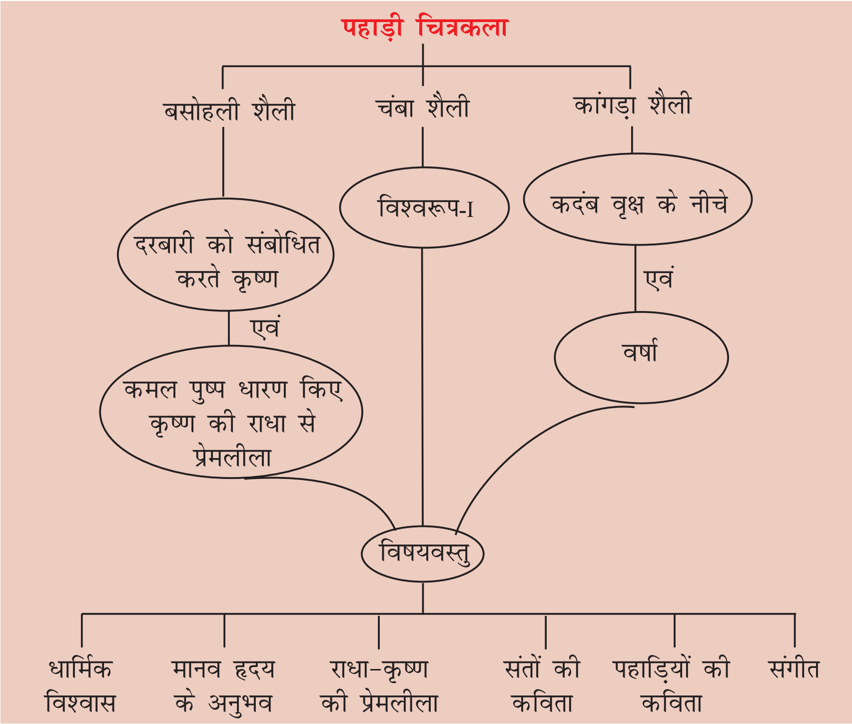

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी :

- स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों द्वारा स्वर बनाते हैं।
- घरेलू सामग्री का उपयोग करके पहाड़ी चित्र बनाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. 'कांगड़ा चित्रकला' की केंद्रीय विषयवस्तु क्या है?
2. कांगड़ा चित्रों में प्रेम को किस प्रकार दर्शाया गया है?
3. पहाड़ी चित्रकला में 16वीं तथा 17वीं सदी के धार्मिक नायकों, कवियों और विचारकों का क्या योगदान है?
4. 'बसोहली शैली' की क्या विशेषताएँ हैं?
5. कांगड़ा और बसोहली चित्रों में कृष्ण तथा राधा की आकृतियों में क्या अन्तर है?
6. चंबा चित्रों की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
7. लघुचित्रों को चित्रित करने में किस माध्यम का प्रयोग किया गया है?
8. जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' ने पहाड़ी चित्रकारों को किस प्रकार प्रेरित किया?
9. रंगों के सांकेतिक प्रयोग का उल्लेख कीजिए।
10. वैष्णव पंथ किसका प्रतीक है?
11. 'बसोहली' चित्रों के विषय क्या हैं?
12. बसोहली शैली की विशिष्टता क्या है?
13. 'बसोहली' और 'कांगड़ा' शैलियों के कृष्ण और राधा में क्या अंतर है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. प्रेम
2. रामानुज और जयदेव
3. कृष्ण और राधा

8.2

1. जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' तथा तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस'।

2. ग्यारहवीं एवं बारहवीं सदी में वैष्णव पंथ का पुनरुत्थान। रामानुज ने विष्णु की पूजा को लोकप्रिय बनाया। 'गीत गोविन्द' राधा और कृष्ण के दैवीय प्रेम पर आधारित गीतों हेतु प्रसिद्ध हुई। पंजाब की संस्कृति एवं गुरुनानक द्वारा आरंभ किए गए महान सिख आन्दोलन ने कांगड़ा चित्रकारों को बहुत प्रेरित किया। भक्तिपंथ का इन चित्रों के विकास में प्रमुख योगदान था।

3. कोमल रेखाएँ जिनके द्वारा विभिन्न आकारों और आकृतियों का निरूपण किया गया तथा कोमल व मिश्रित रंगों का प्रयोग किया गया।

4. प्राकृतिक स्रोतों से।

8.3

1. कागज पर अपारदर्शी जलरंग।

2. रसमंजरी, गीत गोविंद

8.4

1. 1660-70 ईसवी

2. रंग अधिक चमकीले और शुद्ध हैं।

8.5

1. 18वीं सदी

2. भारतीय शैली, कृष्ण उपासना से प्रेरित, सपाट तथा चमकदार रंगों का अधिक प्रयोग, जटिल, प्रतीकात्मक प्रस्तुति।

3. विश्वरूप-शृंखला (18वीं सदी)

   भागवत-पुराण (1757 ईसवी)

   रामायण (1750-1775 ईसवी)

   दशावतार-शृंखला (1725-1750 ईसवी)

शब्दकोश

संजाति	:	जाति विशेष के लोगों से जुड़ा हुआ
राजसी	:	राजघराने या दरबार से संबद्ध
धड़	:	शरीर का मध्य भाग
शंख	:	धार्मिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शंख। भगवान विष्णु के मुख्य वर्णन में से एक है।
पकने वाला	:	पूरी तरह से विकसित और परिपक्व
ग्रामीण/देहाती	:	गाँव की पृष्ठभूमिवाला
दैवीय/अलौकिक	:	ईश्वर से संबद्ध या इस लोक से ऊपर का
चित्रित पाण्डुलिपि	:	हाथ से लिखी पुस्तक जिसमें चित्रांकन भी हो।
एकचश्म	:	एक तरफ का चेहरा, जिसमें एक आँख दिखाई देती है।